कमलेश्वर (लेखक)

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना (6 जनवरी 1932 - 27 जनवरी 2007), जिन्हें **कमलेश्वर** के नाम से जाना जाता है , 20वीं सदी के भारतीय लेखक थे जिन्होंने हिंदी में लिखा। उन्होंने भारतीय फिल्मों और टेलीविजन उद्योग के लिए पटकथा लेखक के रूप में भी काम किया। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में *आंधी* , *मौसम* , *छोटी सी बात* और *रंग बिरंगी* फ़िल्में हैं। उन्हें उनके हिंदी उपन्यास *कितने पाकिस्तान* (अंग्रेजी में *पार्टीशन* के रूप में अनुवादित) के लिए 2003 साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2005 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था

उन्हें मोहन राकेश , निर्मल वर्मा , राजेंद्र यादव और भीष्म साहनी जैसे हिंदी लेखकों की श्रेणी का हिस्सा माना जाता है , जिन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व साहित्यिक व्यस्तताओं को छोड़कर नई संवेदनाओं को प्रस्तुत किया, जो स्वतंत्रता-उत्तर भारत की नई जड़ों को दर्शाती थीं, और इस प्रकार 1950 के दशक में हिंदी साहित्य में *नयी कहानी आंदोलन की शुरुआत की।*

जीवनी

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना का जन्म भारत के उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ था , जहाँ उन्होंने अपने शुरुआती साल बिताए। कमलेश्वर की पहली कहानी, "कॉमरेड", 1948 में प्रकाशित हुई थी।

बाद में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक और उसके बाद हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उनका पहला उपन्यास *बदनाम गली* (*शापित गली*) तब प्रकाशित हुआ जब वे अभी भी छात्र थे; [5] बाद में उन्होंने इलाहाबाद में ही अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की।

कैरियर

अपने शुरुआती दिनों में, उन्होंने एक प्रूफ़रीडर के रूप में काम किया, 1950 के दशक के अंत में साहित्यिक पत्रिका 'विहान' के संपादक बन गए। इसके बाद उन्होंने कई हिंदी पत्रिकाओं का संपादन किया, जैसे 'नई कहानियाँ' (1963-66), 'सारिका' (1967-78), 'कथा यात्रा' (1978-79), 'गंगा' (1984-88) और साप्ताहिक पत्रिकाएँ, 'भाषा' (1961-63) और 'श्रीवर्ष' (1979-80), इसके अलावा, वे हिंदी दैनिक ' दैनिक जागरण ' (1990-1992), और ' दैनिक भास्कर ' (1996-2002) के संपादक भी रहे, [4] और आधुनिक भारत की नई और उभरती आवाज़ों पर ध्यान केंद्रित करके हिंदी पत्रिका 'सारिका' को पुनर्जीवित करने में मदद की, एक ऐसा प्रयास जिसने मराठी दलित लेखकों और बोहरा मुस्लिम साहित्यकारों को उनके प्रोत्साहन को प्रतिबिंबित किया, इस प्रकार हिंदी पाठकों के लिए नए रास्ते खोले।

...एक समय था जब पेड़ इंसानों के घरों को धूप और हवा से बचाते थे। अब, पेड़ों को ऊंची कंक्रीट की इमारतों की छाया में उगने की आदत हो गई है

कमलेश्वर अपनी लघु कथाओं और कुछ अन्य रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हुए, जिनमें समकालीन जीवन को जीवंत शैली में दर्शाया गया था। उनकी कहानी, 'राजा निरबंसिया' (1957) के प्रकाशन के साथ ही उन्हें तुरंत अपने समय के अग्रणी लेखकों की श्रेणी में रखा गया। अपने चार दशकों के विपुल करियर में, उन्होंने तीन सौ से अधिक

कहानियाँ लिखीं, जिनमें "माँस का दरिया", "नीली झील" और "कस्बे का आदमी" शामिल हैं, [7] उन्होंने दस से अधिक लघु कहानी संग्रह, दस उपन्यास प्रकाशित किए जिनमें से सबसे प्रमुख हैं, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, लौटे हुए मुसाफिर, काली आंधी, आगामी अतीत, रेगिस्तान और कितने पाकिस्तान, इसके अलावा साहित्यिक आलोचना, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण से लेकर सामाजिक-सांस्कृतिक टिप्पणी तक विभिन्न विधाओं में 35 अन्य साहित्यिक कृतियाँ।

फ़िल्में

वह 1970 के दशक में बॉम्बे चले गए और हिंदी फिल्मों के लिए पटकथा और संवाद लिखना शुरू कर दिया, अगले एक दशक में, उन्होंने 75 से अधिक फीचर फिल्मों के लिए काम किया, जिसमें गुलज़ार की *आंधी* , उनके उपन्यास काली आंधी पर आधारित, *मौसम* ; बासु चटर्जी , *छोटी सी बात* , *रंग बिरंगी* और रवि चोपड़ा की थ्रिलर, *द बर्निंग ट्रेन* जैसी फिल्में शामिल हैं । वास्तव में, अपने कामों को याद करते हुए प्रसिद्ध कवि-निर्देशक, गुलज़ार ने कहा कि "'कितने पाकिस्तान' में ... एक वर्णन है जहां एक रूमाल पुल से गिरता है; मैं हमेशा उनसे कहता था कि मैं केवल इस एक पंक्ति पर एक पूरी छोटी कहानी लिख सकता हूं। "। द्वारा निर्देशित *पति पत्नी और वो के* लिए सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए १९७९ का फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार जीता ।

टेलीविज़न

1970 के दशक के अंत तक, उन्होंने दिल्ली में यमुना नदी के पास अपनी पहली लघु टीवी फिल्म *"जमुना बाज़ार" बनाई थी, और जल्द ही टेलीविज़न पटकथा लेखन में बदल गए, और अंततः भारत के राष्ट्रीय टेलीविज़न चैनल,* दूरदर्शन के 'अतिरिक्त महानिदेशक' बन गए , (1980-82), उनके कार्यकाल के दौरान, 24 महीनों के भीतर, पूरा देश टेलीविज़न नेटवर्क से जुड़ गया था।

पिछले कुछ वर्षों में, उन्होंने *चंद्रकांता* , *आकाश गंगा* , *युग* और *बेताल पचीसी* सहित दस टीवी धारावाहिकों में कहानियाँ लिखीं , साथ ही *दर्पण* और *एक कहानी* जैसे साहित्यिक कार्यों पर आधारित लोकप्रिय धारावाहिक भी बनाए । [११] उन्होंने दूरदर्शन पर एक लोकप्रिय टॉक शो *परिक्रमा की* मेजबानी की , एक साप्ताहिक साहित्यिक शो *पत्रिका शुरू किया और* दूरदर्शन के लिए सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर कई टेलीविजन कार्यक्रमों और खोजी वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन भी किया ।

बाद के वर्ष

उन्हें 1947 में भारत के विभाजन पर आधारित उनके उपन्यास , *कितने पाकिस्तान* (शाब्दिक रूप से *कितने पाकिस्तान?* लेकिन अंग्रेजी में इसका अनुवाद *पार्टिशन्स के रूप में किया गया है) के लिए 2003* साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था , जिसमें एक अलंकारिक अदालती मुकदमे के माध्यम से राष्ट्रों के टूटने के तरीके की खोज की गई थी, जिसमें ऐतिहासिक और राजनीतिक हस्तियां गवाह के रूप में मौजूद थीं, [13] और 2005 में पद्म भूषण ।

कई वर्षों तक ख़राब स्वास्थ्य के बाद 27 जनवरी 2007 को फरीदाबाद

अंग्रेजी अनुवाद में उनकी लघु कथाओं का एक संग्रह, *नॉट फ्लावर्स ऑफ हिना* , 2007 में जारी किया गया था।

साहित्यिक कृतियाँ

- *आगामी अतीत*
- *आज के प्रसिद्ध शायर शहरयार*
- *आज़ादी मुबारक*
- *अम्मा*
- *अंबिता व्याटित*
- *आँखो देखा पाकिस्तान*
- *आत्मकथा* (3 भाग)
- *बयान*
- *भारतमाता ग्रामवासिनी*
- *चंद्रकांता* (विशेष रूप से लोकप्रिय टीवी धारावाहिक के लिए उनके द्वारा पुनः लिखित)
- *डाक बांग्ला*
- *देस-परदेस*
- *एक सड़क सत्तावन गलियाँ*
- *जॉर्ज पंचम की नाक*
- *गुलमोहर फिर खिलेगा*
- *हिंदुस्तान हमारा*
- *हिंदुस्तानी गजलीन*
- *जलती हुई नदी* (भाग 3)
- *जिंदा मुर्दे* (कहानी संग्रह)
- *जो मैने जिया* (भाग 1)
- *कहानी की तीसरी दुनिया*
- *काली आंधी*
- *कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ*
- *कस्बे का आदमी*
- *कश्मीर रात के बाद*
- *कथा प्रस्थान*
- *खोयी हुई दिशाएं*
- *कितने पाकिस्तान* (उपन्यास)
- *Köhra*
- *मानस का दरिया*
- *मति हो गई सोना*
- *महफिल*
- *मेरे हमसफ़र*
- *मेरी प्रिय कहानियाँ*
- *परिक्रमा*
- *पति पत्नी और वाह*
- *राजा निरबंसिया*
- *रेगिस्तान*
- *समग्र कहानियाँ*
- *समग्र उपन्यास* (एक उपन्यास)
- *समुद्र में खोया आदम*
- *सोलह चाटों वाला घ*
- *सुबह दोपहर शाम*
- *स्वातंत्र्योत्तर हिंदी क*
- *तीसरा आदमी*
- *तुम्हारा कमलेश्वर*
- *वही बात*
- *यादों के चिराग* (भाग

ग्रंथ सूची

- *सत्तावन लेन वाली सड़क*
- *मेंहदी के फूल नहीं*
- *कितने पाकिस्तान* , राजपाल एंड संस, 2000. (पुनर्मुद्रण: 2004, आईएसबीएन 81-7028-320-5)
- *विभाजन* , पेंगुइन बुक्स, 2006. आईएसबीएन 0-14-400099-7 (पुनर्मुद्रण: 2008, आईएसबीएन 978-0-14-306370-4 ; प्रस्तुति)
- "जॉर्ज पंचम की नाक". एनसीईआरटी .

फिल्मोग्राफी

- *सारा आकाश* (1969) (संवाद)
- *बदनाम बस्ती* (1971) (कहानी)
- *आंधी* (1975) (कहानी)

- *मौसम* (1975) (कहानी)
- *अमानुष* (1975) (संवाद) [4]
- *छोटी सी बात* (1975) (संवाद और पटकथा)
- *आनंद आश्रम* (1977) (संवाद)
- *द बर्निंग ट्रेन* (1979) (संवाद और पटकथा)
- *राम बलराम* (1980) (संवाद और पटकथा)
- *साजन की सहेली* (1981) (संवाद और पटकथा)
- *सौतेन* (1983) (संवाद)
- *रंग बिरंगी* (1983) (कहानी)
- *ये देश* (1984) (संवाद)
- *लैला* (1984) (संवाद और पटकथा)
- *प्रीति* (1986) (संवाद और पटकथा)
- *सौतन की बेटी* (1989) (संवाद)